58U5L3

पाठ–3

सोन के फर

पाठ परिचय– लइका मन ल दूसर के कॉंही जिनिस, खाई–खजानी ल देखके लालच आ जथे। कभू–कभू बड़े मन घलोक लालच म चोरी–हारी कर डरथें। तब ए मन ल थाना, पुलिस, कोरट–कछेरी नइ लेग के गाँव में बइठका करके समझाना–बुझाना बने होथे। ए पाठ म सोन के फर चोरी करइया मनखे मन ल अइसने ढंग ले सुधारे के उदीम करे गिस, तेन ल बताए गे हे।

ए पाठ ले हमन सीखबो–पुनरुक्त शब्द, विराम चिह्न, शब्द मन ल बारह खड़ी के ओरी म लिखना, शब्द मन के लिंग जानना, हाना, मुहावरा मन के प्रयोग।

गजब दिन के बात आय। एक ठन गाँव रहिस। इहाँ के आदमी मन खेती–किसानी के बुता करँय। जेकर खेत–खार नइ रहँय, ओमन छेरी–पठरू अउ गाय–गरुवा राखे रहँय। उही मन ल चरावँय। दूध–दही, गोबर, छेना बेच के अपन गुजर–बसर करँय।

इही गाँव म सुखराम नाँव के मनखे रहिस। ओकर खेती–खार नइ राहय त ओहा छेरी–पठरू राखे रहय। ओहा दिन भर जंगल–झाड़ी म जाके छेरी चरावय। संझा होय ले गाँव लहुट जाय। छेरी–पठरू मन हरियर–हरियर पाना–पतउवा खाके मेछरावत लहुटँय।

एक दिन के बात आय। सुखराम ह छेरी–पठरू ल लेके जंगल म दुरिहा निकलगे। जेठ के महिना रहय। आगी के आँच कस घाम। घाम म फुतकी ह कुधरा कस तिपगे रहय। तीर–तखार म पानी के बूँद नइ रहय, सुखराम पियास के मारे तरमरा गे। फेर का करय ? थक के रूख के छइँहा तरी बइठगे। छेरी–पठरू मन उही मेर बगर के चरत रहँय।

थोरिक म शंकर भगवान ह उही मेर आइस। ओहा सुखराम ल पियास के मारे तालाबेली करत देखिस। ओहा साधु के भेस बनाइस। हाथ म पानी भरे कमंडल धरे ओकर तीर म जाके पूछिस– "कस जी सुखराम, तैंय ह काबर तालाबेली देत हस ?"

ओहा कहिस – "का बतावँव महराज, पियास के मारे मोर जीव छूटत हे।"

शंकर भगवान ल दया आ गिस। ओहा कमंडल के पानी ल सुखराम तिर मढ़ा दिस अउ एक पसर फर ओला दिस। ओहा कहिस, "खाय के पुरती ल खा ले। बाँचही तेन ल घर के पठेरा म मढ़ा देबे।"

सुखराम ह चार ठन फर ल खाइस। गटर–गटर पानी पीइस। बाँचिस तेन फर ल पंछा के छोर म बाँध के धर लिस।

शिक्षण संकेत– पाठ ल शुद्ध ढंग ले पढ़ावव अउ लइका मन ल पढ़े बर काहव। लइका मन ले घलोक छोटकुन कहिनी, कथा सुनव। लोककथा ल हाव–भाव सँग बतावव। एकर मनखे मन के बारे म सँगवारी मन संग गोठियावव।

दिन भर के थके–माँदे सुखराम ह संझाकुन घर लहुटिस। अपन गोसइन सुखिया संग गोठियाइस–बताइस। बाँचे फर ल रँधनी के पठेरा म कलेचुप मढ़ा दिस। खटिया म परतेच ओकर नींद परगे। कुकरा बासत ओकर नींद खुलिस। हाथ– मुँह धोके रँधनी म गिस। पठेरा ल देखिस। सुखराम अकचका गे। ओ फर मन सोन के हो गे रहय। सुखराम ओला कलेचुप धर लिस अउ छेरी मन ल ढील के जंगल डहर चल दिस।

सुखराम मने–मन म गद्‌गद होवत रहय। फेर संसो घलोक करय–सोन के फर ल का करँव? "दिनभर ह बीत गे। रातभर ओला नींद नइ आइस। दूसर दिन शहर जाके बेचे बर सोचिस। ओहा बड़े फजर उठ गिस। सुखिया ल छेरी पठरू ल चराय बर भेज दिस।

लकर–धकर रेंग के सुखराम शहर गिस। सोनार मेर जाके सोन के फर ल देखाइस। चमचमावत सोनहा फर ल देख के सोनार के लार टपके लगिस। ओ हा पूछिस ''येला तउलँव'' ?

सुखराम कहिस– "हाँ भइया। येला झटकन तउल अउ मोला पइसा दे।" सोनार झट ले फर ल तराजू म तउलिस। रुपिया के गड्डी ओला दे दिस।

घर जाके सुखराम सुखिया ल सबे बात ल बता दिस। दुनो सुनता करके नवा घर बनवाइन। भँड़वा बरतन नवा–नवा बिसा लिन। सुखिया के तन भर जेवर ल देखके पारा–परोस के मन अकचका जाँय। जेने देखय तेने पूछय "कहाँ ले अतेक पइसा पायेव ?"

दुनो झन सिधवा रहिन। सबो झन ल सहीं बात ल बता दीन के उँखर घर म सोन के फर हे। ओला बेच के पइसा भँजा लेथन। गाँव भरके मनखे ए बात ल जान डरिन।

एक दिन के बात आय। चार झन चोरहा मनखे मन सुखराम घर आइन अउ पूछिन–"चल तो देखा, कहाँ हे सोन के फर ?"

सुखराम भल ल भल जानिस। ओ हा चारो झन ल रँधनीघर म लेगिस अउ पठेरा म माढ़े फर ल देखा दिस। चमचमावत सोन के फर ल देखिन त चोर मन के मन म लालच आगे, ओमन कलेचुप ओकर घर ले निकलगें।

अधरतिहा चोर मन सुखराम घर फर के चोरी करे बर खुसरिन। खटर–पटर आरो पा के सुखिया के नींद उमचगे। ओहा सुखराम ल उठाइस। सुखराम ह चोर मन ल चीन्ह डारिस। ओमन सोन के फर ल धरलिन अउ भागते भागिन।

दूसर दिन सुखराम गाँव म बइठका कराइस। सोन के फर पाय के अउ चोरी होय के बात ल सफी–सफा पंच मन ल बताइस। संग में सुखिया घलोक रहिस, चोर मन ल बइठका म बलाइस। ओमन फर ल धरके आइन। पंच ह चोर मन ल लतेड़ के पूछिस–कस जी! सुखराम कहत हे तेन बात ह सिरतोन ए ? "चोर मन सकपकागें, ओमन चोरी करे के सबो बात ल बता दिन। पंच मन फर ल माँगिन। चोर मन फर ल लानके दीन त सब देखिन के फर मन ह कच्चा होगे रहँय।

कच्चा फर ल पंच मन सुखराम ल फेर दे दिन। ओहा रँधनीघर के पठेरा म फर ल मढ़ा दिस। फर सोन के होगे। चारों चोर मन ल पंच मन फटकारिन– "पछीना के कमइ ले मनखे ल सुख मिलथे। चोरी–ठगी ले काम कभू नइ बनय। चोर मन कभू महल नइ बनावय।"

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने –

फर	– फल	गजब	–	बहुत	अचकचाना	–	आश्चर्य में पड़ना
गरुवा	– गोवंश	संझा	–	शाम	मेछराना	–	प्रसन्नता से उछल कूद करना
दुरिहा	– दूर	आगी	–	आग	बगरना	–	बिखरना
घाम	– धूप	रेती	–	रेत	पठेरा	–	आला
काबर	– क्यों	जीव	–	प्राण	बाचही	–	बचेगा
छइहाँ	– छाया	थोरिक	–	थोड़ा	लहुटिस	–	लौट गया
गोसइन	– पत्नी	रंधनी	–	रसोई	संसो	–	चिंता
आँच	– ताप	खटिया	–	खाट	लकर–धकर	–	जल्दी जल्दी
सोनार	– स्वर्णकार	रेंगना	–	चलना	बिसा लीन	–	खरीद लिया
सोनहा	– सोने का	गड्डी	–	गड्डी	उमचगे	–	नींद खुल गई
बुता	– काम	सिरतोन	–	सचमुच	अधरतिहा	–	आधी रात के समय
बइठका	– बैठक	कलेचुप	–	चुपचाप	कुधरा	–	रेत/धूल

प्रश्न अउ अभ्यास

प्रश्न 1. खाल्हे म लिखे प्रश्न मन के जवाब लिखव ।

(क) सुखराम छेरी–पठरू चराए बर कहाँ गय रिहिस ?

(ख) सुखराम काबर तालाबेली देत रहिस ?

(ग) सुखराम ल कोन पानी दिस ?

(घ) साधु के दे फर का होगे ?

(ड़) सुखराम सोन के फर ल का करिस ?

(च) सुखराम के गोसइन के का नाव रहिस ?

प्रश्न 2. सुखराम के बारे म चार वाक्य लिखव ?

प्रश्न 3. तुमन कहानी ल धियान लगा के पढ़े हव। अब लिखव के ए बात ल कोन ह कोन ल कहिस–

(क) "कस जी सुखराम तैंहा काबर तालाबेली देत हस ?"

(ख) "हाँ भइया। एला झटकन तउल अउ मोला पइसा दे।"

(ग) "चल तो देखा, कहाँ हे सोन के फर ?"

(घ) "कस जी! सुखराम कहत हे तेन बात ह सिरतोन ए ?"

प्रश्न 4. साधु के ए बात ल धियान लगा के पढ़व अउ खाल्हे म लिखाय प्रश्न के जवाब लिखव–

"खाए के पुरती ल खा ले। बाँचही तेन ल घर के पठेरा म मढ़ा देबे। "

(क) साधु सुखराम ल का दिस ?

(ख) बाँचे फर ल पठेरा म राखे बर काबर कहिस ?

प्रश्न 5. खाल्हे म लिखे वाक्य ल धियान देके पढ़व अउ गुन के लिखव के का होतिस–

(क) शंकर जी नइ आतिस त ?

(ख) सोन के फर ल नइ बेचतिस त ?

(ग) बइठका म चोर मन ल नइ बलातिस त ?

प्रश्न 6. ए लोककथा म काकर काम सबले बने लगिस ? कारन समेत पाँच वाक्य म अपन विचार लिखव ।

भाषा–अध्ययन अउ व्याकरण

गतिविधि

कक्षा के कोनो लइका पाठ के तीन–चार वाक्य ल धीर लगाके पढ़य अउ दूसर मन सुन के लिखँय। तेकर पाछू लइका मन एक दूसर के कापी अदल–बदल के लिखाय वाक्य ल जाँचय।

प्रश्न 1. ए शब्द मन ल बाराखड़ी अनुसार सरलग लिखव–(जइसे –अपन, आदमी)

घाम	रेंगना	गड्डी	दुरिहा
कुधरा	सिरतोन	उमचगे	बिसालीन
जीव	अकचका	छइहाँ	संझा
थोरिक	पठेरा	गरुवा	काबर

प्रश्न 2. खाल्हे म लिखे मुखरहा अउ हाना के अर्थ लिखव अउ अपन वाक्य म उपयोग करव।

(क) लार टपकना (ख) महल बनइ

(ग) पछीना के कमइ (घ) सकपकाना

(ड.) चोरी–ठगी (च) जीव छूटना

le>o

''छेरी–पठरू'' शब्द म छेरी अउ पठरू के बीच म लगे '–' चिह्न ल योजक (जोड़ने वाला) चिह्न कहिथें। योजक चिह्न दू शब्द मन ल जोड़थे। दूनो ल मिलाके एक पद बनथे। फेर दूनो के अलगे महत्तम बने रहिथे। 'छेरी–पठरू' शब्द के बीच म योजक चिह्न लगाए गेहे।

इहाँ '–' के मायने ''अउ'' हे।

प्रश्न 3. उल्टा अर्थ वाले चार शब्द गुन के लिखव जेखर बीच म योजक चिह्न लगे होवय।

लोककथा म कोनो–कोनो मेर एके शब्द दू बेर आए हे। जइसे– 'नवा–नवा', अइसना शब्द पुनरुक्त शब्द कहाथे।

प्रश्न 4. चार ठन पुनरुक्त शब्द लिखव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव।

जइसे – '' नवा–नवा ''।

सुखराम ह नवा–नवा भँड़वा–बरतन बिसाइस।

प्रश्न 5. खाल्हे म लिखे शब्द म स्त्रीलिंग अउ पुल्लिंग हे, ओला अलग छाँट के लिखव–
(छेरी, गाय, भगवान, गोसइन, कुकरा)

, okD; y i<o

बरसा होइस तहाँ ले '' गाय–गरुवा '' मन जंगल डहर एती–ओती होगे।
शब्द ल समझव। ''गाय–गरुवा'' म दूनो शब्द के एके अर्थ हे। 'एती–ओती' म दूनो शब्द उल्टा अर्थ वाले हे।

प्रश्न 6. अइसने एके सरिख अर्थ वाले अउ उल्टा अर्थ वाले शब्द ले दू–दी वाक्य बनाके लिखव।

jpuk

पंच मन के फटकार अउ सुखराम के सीधइ के बारे म चोर मन का सोचिन होहीं? सोंच–बिचार के लिखव।

;kX;rk foLrkj

खाल्हे म लिखे कहानी ल पढ़व :–

एक झन सेठ रहय। ओकर बड़ेजन दुकान रहय। दिन भर लेवइया–देवइया मन के भीड़–भड़ाका रहय। त सेठ दूझन नौकर राखिस। दूनो बड़े बिहनिया ले लेके रतिहा होत ले दुकान म काम करँय। सेठ दूनो झन ल बरोबर रोजी देवय। सेठइन घलोक घर जाए के बेरा लइका मन बर खइ खजेना देवय।

अइसे–तइसे दिन बीते लागिस। सेठ ल अपन दुकान के समान मन कमती होत दिखिस। बेचातिस त गल्ला म पइसा आतिस। अभी गल्ला अउ दुकान दूनो उन्ना दिखय। सेठ ह ए बात ल सेठइन मेर कहिस त उहू कहिस, ''महूँ ल दुकान के समान मन चोरी होय कस लागथे।''

सेठ–सेठइन दुनो ओसरीपारी नौकर मन के घर गिन। अउ उँकर घर म का–का जिनिस हावय तेला देखिन। त एक झन के घर म दुकान के कइ ठन समान ह दिखिस। सेठइन ह ओ नौकर ल दुकान ले निकाल दे कहिस।

त सेठ ह सोचिस ''ओखरो नान–नान लइका हें। ओकर पालन–पोसन कइसे होही? फेर कोनो दूसर मेर काम बुता म जाही त उहों चोरी–हारी करही, ओला निकाले म काम नइ बनय। ओला कइसनो करके सुधारे बर परही। ओकर मया दूनो बर बराबर रहिस।''

सेठ ह दूनो झन के रोजी ल बढ़ा दिस। ओकर लइका मन बर कपड़ा–लत्ता अउ पढ़इ–लिखइ के खरचा ल घलोक दे लगिस। सेठइन कहिस ''जम्मो ल नौकर–चाकर मन ल लुटा देहू त हमर लइका मन के मुँह म पैरा बोजा जाही।''

सेठ कहिस– ''नहीं सेठइन, ओहा मोर दुकान ल बढ़ाय म मिहनत करत हे। ओकर घर म तंगी होय के सेती कुछू जिनिस मन ल लेग जथे। ओला सुधारना मोरे काम ए।''